



જાન્યારી ૨૦૧૭

Zulm Ka Anjam (Gujarati)

ઝુલ્મ કા અંજામ

- ❁ નેહું કા ઘાન તોડને કા ઉખરી નુકસાન ૦૦
- ❁ અઘાએ કર્ણે જેં મિલક વજાહ તાબીર નુકાહ હેં ૧૧
- ❁ ઘમ ઘરીક હેં સાથ ઘરીક ઔર..... ૧૪
- ❁ મિયેર ઉજાહાલ કિસી કો વાઘવ પઠાનઘ કેસા ? ૨૦
- ❁ મતલુમ હી ઉમદાહ કરના તરૂરી હેં ૨૭
- ❁ મુખવિક લુહુક સીખને કા તરીકા ૩૨
- ❁ ખાત ચીત કરને કે ૧૨ મઠની રૂલ ૪૨

શીમે તરીકત, સખીં અફલે સુખત ઝાનિયે ઠાંવો ઇલામી, ઠાહત ઇલામ મીઠાલા અબૂ મિલક

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અતાર કાદિરી રઝવી

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હઝરતે અલ્લામા

મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી રઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

દીની કિતાબ યા ઇસ્લામી સબક પઢને સે પહલે જૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ લીજિયે

ان شاء الله تعالى જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હૈ :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહ! હમ પર ઇલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઓર હમ પર
અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અઝમત ઓર બુઝુર્ગા વાલે !

(مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠٤ دار الفكر بيروت)

નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરૂદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના
વ બકીઅ
વ મગિફરત



13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428

નામ રિસાલા : ગુલ્મ કા અન્જામ

સિને તબાઅત : સફરુલ મુઝફ્ફર. 1443 હિ. સપ્ટેમબર 2021 સિ. ઈ.

તા'દાદ : 2100

નાશિર : મક્તબતુલ મદીના

મદની ઇક્તિજા : કિસી ઓર કો યેહ રિસાલા છાપને કી ઈજાઝત નહી હૈ.

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

जुल्म का अन्जाम¹

शैतान लाभ सुस्ती दिलाओ येह रिसाला (44 सफ़हात) मुकम्मल पढ
 लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ भौके खुदा से रो पड़ेंगे.

भोतियों वाला ताज

“अल कौलुल बदीअ” में है : उजरते सय्यिदुना शैख अहमद
 बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفُؤْر को भा'दे वफ़ात किसी ने ज्वाब में इस डाल
 में देभा के वोह जन्नती हुल्ला (खिबास) जेभे तन किये भोतियों वाला ताज
 सर पर सजाओ “शीराज” की जामेअ मस्जिद की मेहराब में जडे हें,
 ज्वाब देभने वाले ने पूछा : مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ؟ या'नी अल्लाह एज़ोज़ल ने
 आप के साथ क्या मुआमला इरमाया ? कडा : अल्लाह एज़ोज़ल ने मुजे
 बज्श दिया, मेरा इकराम इरमाया और भोतियों वाला ताज पहना कर
 दाभिले जन्नत किया. पूछा : किस सबब से ? इरमाया أَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ में
 महुबुबे रब्बुल अनाम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत से दुइदो सलाम
 पढा करता था येही अमल काम आ गया. (أَلْقَوْلُ الْبَدِيعِ ص २५४)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

भौकनाक डाकू

शैख अबुल्लाह शाफ़े इ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي अपने सइर नामे में लिखते

^{دينه}
 (1) येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دامك بركاته العالیه ने तबलीगे कुरआनो सुन्नत की
 आलमगीर गैर सियासी तहरीक “दा'वते इस्लामी” के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इजतिमाअ
 (सि. 1429,2008) में इरमाया. ज़री तरमीम के साथ तहरीरन डाजिरे बिदमत है.

मजलिसे मकतबतुल मदीना

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे पर एक बार दुइडे पाक पढा अल्वाड उस पर दस रउमतें लेजता है. (مسلم)

हैं : एक बार मैं शहरे बसरा से एक करिया (या'नी गाँव) की तरफ़ जा रहा था. दो पहर के वक्त यकायक एक भौंफ़नाक डाकू हम पर हमला आवर हुआ, मेरे रफ़ीक (या'नी साथी) को उस ने शहीद कर डाला, हमारा माल व मताअ छीन कर मेरे दोनों हाथ रस्सी से बांधे, मुझे जमीन पर डाला और फिरार हो गया. मैं ने जूँ तूँ हाथ जोले और यल पडा मगर परेशानी के आलम में रास्ता भूल गया, यहाँ तक के रात आ गयी. एक तरफ़ आग की रोशनी देख कर मैं उसी सभ्त यल दिया, कुछ देर यलने के बाद मुझे एक भैमा नजर आया, मैं शिदते प्यास से निढाल हो चुका था, लिहाजा भैमे के दरवाजे पर जडे हो कर मैं ने सदा लगाई : **الْعَطَشُ! الْعَطَشُ!** या'नी "हाअे प्यास ! हाअे प्यास !" इत्तिफ़ाक से वोह भैमा उसी भौंफ़नाक डाकू का था ! मेरी पुकार सुन कर बज्जअे पानी के नंगी तलवार लिये वोह बाहर निकला और याहा के एक ही वार में मेरा काम तमाम कर दे, उस की बीवी आडे आई मगर वोह न माना और मुझे घसीटता हुआ दूर जंगल में ले आया और मेरे सीने पर यढ गया मेरे गले पर तलवार रख कर मुझे ज़ब्त करने ही वाला था के यकायक ज़ाडियों की तरफ़ से एक शेर दहाउता हुआ भर आमद हुआ, शेर को देख कर भौंफ़ के मारे डाकू दूर जा गिरा, शेर ने जपट कर उसे थीर फ़ाड डाला और ज़ाडियों में गाईब हो गया. मैं इस गैबी इमदाद पर खुदा **كُفِّرْكَ** का शुक्र बज्ज लाया.

सय है के बुरे काम का अन्जाम बुरा है

जालिम को मोहलत मिलती है

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ? जुल्म का अन्जाम

किस कदर भयानक है. हज़रते सय्यिदुना शैख मुहम्मद बिन इस्माईल

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शम्स की नाक भाक आवूद छो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वो छ मुज पर दुरदे पाक न पढे. (त्रमन्)

बुभारी رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي “सही छ बुभारी” में नकल करते हैं : छरते सय्यिदुना अबू मूसा अशररी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे मदीनअे मुनक्वर छ, सरदारे मक्कअे मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : बेशक अद्ला छ عَزَّوَجَلَّ जालिम को मोडलत देता है यछां तक के जब उस को अपनी पकड में लेता है तो इर उस को नहीं छोडता. ये छ इरमा कर सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पार छ 12 सूरअे छूद की आयत 102 तिलावत इरमा छ :

كُذِّبَكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ
الْقُرْآنَ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ إِنَّ أَخْذَهُ
الْيَمِّ سَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾

तरजमअे क-जुल इमान : और ऐसी छी पकड है तेरे रब (عَزَّوَجَلَّ) की जब बस्तियों को पकडता है उन के जुल्म पर. बेशक उसकी पकड ददनाक करी है.

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ٣ ص ٢٣٤ حَدِيثُ ٦٨٦٦)

दछशत गर्दों, लुटेरों, कत्वो गारत गरी का बाजार गर्म करने वालों को बयान कर्दा छिकायत से इब्रत छसिल करनी याछिये, उन्हें अपने अन्जाम से बे षबर नहीं रहना याछिये के जब दुन्या में भी कडर की बिजली गिरती है तो इस तर छ के जालिम लोग कुत्ते की मौत मारे जाते हैं और उन पर दो आंसू बछाने वाला भी कोछ नहीं छोता और आ छ ! आभिरत की सजा कौन बरदाशत कर सकता है ! यकीनन लोगों पर जुल्म करना गुना छ, दुन्या व आभिरत की बरबादी का सबब और अजाबे छहन्नम का बाछस है. इस में अद्ला छ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ना इरमानी भी है और बन्दों की छक तलछी भी. छरते जुरजानी छिनुअे अपनी क्तिाब “अत्ता’रीफ़ात” में जुल्म के मा’ना बयान

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर दस भरतबा दुर्रटे पाक पढे अद्लाह उस पर सो रडमते नाज़िल करमाता है. (طبرانی)

करते हुअे लिखते हैं : किसी यीज़ को उस की जगह के ँलावा कही और रणना. (التعريفات للجرجاني ص ۱۰۲) शरीअत में जुल्म से मुराद येह है के किसी का हक मारना, किसी को गैर महल में अर्य करना, किसी को बिगैर कुसूर के सज़ा देना. (भिरआत, जि. 6, स. 669) जिस षौफ़नाक डाकू का अमी आप ने तज़क़िरा समाअत इरमाया, वोह लूट मार की आतिर कत्ले ना हक भी करता था, हुन्या ही में उस ने जुल्म का अन्जाम देण लिया. न जाने अब उस की कब्र में क्या हो रहा होगा ! नीज़ क़ियामत का मुआमला अमी बाकी है. आज भी डाकू उमूमन माल के लालय में कत्ल भी कर डालते हैं. याद रणिये ! कत्ले ना हक ँन्तिहाँ तयानक जुर्म है.

औंधे मुंड जहन्नम में

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन ँसा तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَنْوَى अपने मशहूर मज़मूअअे अहादीस “तिरमिज़ी” में हज़रते सय्यिदुना अबू सँदद पुदरी व अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से नकल करते हैं : “अगर तमाम आस्मान व जमीन वाले अेक मुसल्मान का षून करने में शरीक हो जाँ तो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ उन सबों को मुंड के बल औंधा कर के जहन्नम में डाल देगा.” (سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج ۳ ص ۱۰۰ حديث ۱۴۰۳ دارالفکر بيروت)

आग की बेडियां

लोगों का माले ना हक दबा लेने वालों, उकेतियां करने वालों, शिक्कियां त्तेज कर रकमों का मुतालबा करने वालों को षूब गौर कर लेना याहिये के आज जो माले हराम व आसानी गले से नीचे उतरता हुवा महसूस हो रहा है वोह बरोजे क़ियामत कहीं सप्त मुसीबत में न डाल

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तहकीक वोह बढे भप्त हो गया. (ابن سنی)

दे. सुनो! सुनो! उजरते सय्यिदुना इकीह अबुल्लैस समर कन्दी عَلَيْهِ وَحَسْبُهُ اللهُ الْقَوِيُّ इकीह अबुल्लैस समर कन्दी
 “कुर्तुल उयून” में नकल करते हैं : बेशक पुल सिरात पर आग की बेडियां
 हैं, जिस ने हराम का एक दिरहम भी लिया उस के पाउं में आग की
 बेडियां डाली जायेंगी, जिस के सबब उसे पुल सिरात पर गुजरना
 दुश्वार हो जायेगा, यहां तक के उस दिरहम का मालिक उस की नेकियों में
 से इस का बदला न ले ले अगर उस के पास नेकियां नहीं होंगी तो वोह
 उस के गुनाहों का बोझ भी उठायेगा और जहन्नम में गिर पड़ेगा.

(قُرَّةُ الْعُيُونِ وَمَعَ الرُّوضِ الْفَائِقِ ص ۳۹۲)

मुफ़लिस कौन

उजरते सय्यिदुना मुस्लिम बिन उज्जुज कुशैरी عَلَيْهِ وَحَسْبُهُ اللهُ الْقَوِيُّ
 अपने मशहूर मजमूअये हदीस “सहीह मुस्लिम” में नकल करते हैं :
 सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार,
 हम गरीबों के गम गुसार, हम बे कसों के मददगार, शहीअे रोजे
 शुमार, जनाबे अहमदे मुप्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस्तिफ़सार
 इरमाया : क्या तुम जानते हो मुफ़लिस कौन है? सहाबअे किराम الرِّضْوَانِ عَلَيْهِمُ
 ने अर्ज की : या रसूलदलाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम में से जिस के पास
 दराहिम व सामान न हों वोह मुफ़लिस है. इरमाया : “मेरी उम्मत में
 मुफ़लिस वोह है जो कियामत के दिन नमाज, रोजे और जकात ले कर
 आया और यूं आया के इसे गाली दी, उस पर तोहमत लगाई, इस का
 माल जाया, उस का पून बहाया, उसे मारा तो उस की नेकियों में से कुछ
 इस मजलूम को दे दी जायें और कुछ उस मजलूम को फिर अगर इस के

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर सुबह व शाम दस दस बार दुर्रदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (مجمع الزوائد)

जिम्मे जो हुकूक थे उन की अदाअेगी से पहले इस की नेकियां अत्म हो जाअें तो उन मजलूमों की अताअें ले कर उस जालिम पर डाल दी जाअें फिर उसे आग में डेंक दिया जाअे..”

(صَحِيح مُسْلِم ص ۱۳۹۴ حدیث ۲۵۸۱ دار ابن حزم بیروت)

लरज उठो !

अै नमाजियो ! अै रोजादारो ! अै हाजियो ! अै पूरी जकात अदा करने वालो ! अै भैरात व हसनात में छिस्सा लेने वालो ! अै नेक सूरत नजर आने वाले मालदारो ! उर जाओ ! लरज उठो ! लकीकत में मुफ़लिस वोह है जो नमाज, रोजा, हज, जकात व सदकात, सभावतों, इलाही कामों और बडी बडी नेकियों के बा वुजूद क्रियामत में ખाली का ખाली रह जाअे ! जिन को कभी गाली दे कर, कभी बिला एज्जते शर्ह डांट कर, बे एज्जती कर के, जलील कर के, मारपीट कर के, आरियतन यीअें ले कर कस्टन वापस न लौटा कर, कर्ज दबा कर, दिल दुखा कर नाराज कर दिया होगा वोह उस की सारी नेकियां ले जाअेंगे और नेकियां अत्म हो जाने की सूरत में उन के गुनाहों का भोज उठा कर वासिले जहन्नम कर दिया जाअेगा.

“सहीह मुस्लिम शरीफ़” में है, अदलाह के महुबूब, दानाअे गुयूब, मुनज्जहुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने एअ्रत निशान है : “तुम लोग हुकूक, लक वालों के सिपुर्द कर दोगे हत्ता के बे सींग वाली का सींग वाली बकरी से बदला लिया जाअेगा..”

(صَحِيح مُسْلِم ص ۱۳۹۴ حدیث ۲۵۸۲)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

मतलब येह के अगर तुम ने दुन्या में लोगों के हुकूक अदा न किये तो ला मडाला (या'नी हर सूरत में) कियामत में अदा करोगे, यहां दुन्या में माल से और आभिरत में आ'माल से, लिडाजा बेहतरी ँसी में है के दुन्या ही में अदा कर दो वरना पछताना पडेगा. “मिरआत शर्ह मिशक़ात” में है : “जानवर अगर्थे शर्ह अडकाम के मुकद्लफ़ नही हैं मगर हुकूकुल ँबाद जानवरों को भी अदा करने डोंगे.” (मिरआत, जि. 6, स. 674) अद्लाह كَرَّمَ وَجْهَهُ का फौफ़ रफने वाले डररात हुकूकुल ँबाद के ड डडिर मा'मूली नजर आने वाले मुआमलात में भी अैसी अेडतियात करते हैं के डैरत में डाल देते हैं. युनान्चे

आधा सेड

डररते सय्यिदुना ँब्राहीम बिन अदडम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अेक डाग के अन्दर नडर में सेड देड, डठया और ड डलिया. डते तो ड डलिया मगर डिर डरेशान डो गअे के येड में ने कया कया ! मैं ने ँस के डालिक की ँजडत के बिगैर कयूं डया ! युनान्चे तलाशते डुअे डाग तक डडोंचे, डाग की डालिका अेक डतून थी, उन से आड رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मा'जिरत तलड डरमाँ, उस ने अरु की : येड डाग मेरा और डदशाड का मुशरिका है, मैं अपना डक मुआफ़ करती हूं लेडिन डदशाड का डक मुआफ़ करने की मजड नही. डदशाड डलड में था लिडाजा सय्यिदुना ँब्राहीम बिन अदडम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने आधा सेड मुआफ़ करवाने के लिये डलड का सडर ँडित्यार कया और मुआफ़ करवा कर डी डड लिया.

(رحلة ابن بطوطة ج ١ ص ٣٤)

करमाने मुस्तक। عَلِيٌّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शक्रामत कर्तूंगा. (جمع الجوامع)

भिलाल का वभाल

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! इस छिकायत में बिगैर पूछे दूसरों की चीजें लडप कर जाने वालों, सञ्जियों और इलों की रेढियों से युपयाप कुछ न कुछ उठा कर अपनी टोकरी में डाल लेने वालों के लिये इभ्रत ही इभ्रत है. ब जाहिर मा'भूली नजर आने वाली शै ल्मी अगर बिगैर इज्जत इस्ति'माल कर डाली और क्रियामत के रोज पकडे गये तो क्या बनेगा ? युनान्थे डजरते अल्लामा अब्दुल वइहाब शा'रानी قَدَسَ سِرُّهُ التُّورَانِي "तम्भीहुल मुगर्तीन" में नकल करते हैं : मशहूर ताबेई बुजुर्ग डजरते सय्यिहुना वइब बिन मुनब्बेह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : अेक इस्राईली शप्स ने अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा की, सत्तर साल लगातार इस तरह इबादत करता रहा के दिन को रोजा रभता और रात को जग कर इबादत करता, न कोई उम्हा गिजा फाता न किसी साअे के नीचे आराम करता. उस के इन्तिकाल के बा'द किसी ने प्वाब में देप कर पूछा : يا'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला इरमाया ? जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरा लिसाब लिया, इर सारे गुनाह बप्श दिये मगर अेक लकडी जिस से मैं ने उस के मालिक की इज्जत के बिगैर दान्तों में भिलाल कर लिया था (और येह मुआमला हुकूकुल इबाद का था) और वोह मुआफ़ करवाना रह गया था इस की वजह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं."

(تَنْبِيهُ الْمُعْتَرِينَ ص ٥١ دارالمعرفة بيروت)

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरद्वे पाक न पढा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया. (طبرانی)

गेहूँ का दाना तोड़ने का उपरवी नुकसान

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! जरा गौर तो कीजिये ! अक तिनका जन्नत में दाखिले से मानेअ (या'नी रुकावट) हो गया ! और अब मा'भूली लकड़ी के षिलाल की तो बात ही कहां है. बा'ज लोग दूसरों के लापों बल्के करोड़ों रुपै हउप कर जाते हैं और उकार तक नहीं लेते. अद्लाह ﷻ हिदायत ईनायत इरमाअे. आमीन. अक और ईअ्रतनाक हिकायत मुलाहज्जा इरमाईये जिस में सिर्फ अक गेहूँ के दाने के षिला ईज्जत खाने के नहीं सिर्फ तोड डालने के उपरवी नुकसान का तजक़िरा है. युनान्चे मन्कूल है के अक शप्स को बा'दे वफ़ात किसी ने ख्वाब में देख कर पूछा : يَا نَبِيَّ اللَّهِ ﷺ ! या'नी अद्लाह ﷻ ने आप के साथ क्या मुआमला इरमाया ? कहा : अद्लाह ﷻ ने मुझे बप्श दिया, लेकिन हिसाब व किताब हुवा यहां तक के उस दिन के बारे में भी मुज से पूछगछ हुई जिस रोज मैं रोजे से था और अपने अक दोस्त की दुकान पर बैठा हुवा था जब ईफ़तार का वक्त हुवा तो मैं ने गेहूँ की अक बोरी में से गेहूँ का अक दाना उठा लिया और उस को तोड कर खाना ही खाहता था के अक दम मुझे अहसास हुवा के येह दाना मेरा नहीं, युनान्चे मैं ने उसे जहां से उठाया था इरैन उसी जगह डाल दिया. और ईस का भी हिसाब लिया गया यहां तक के उस पराअे गेहूँ के तोडे खाने के नुकसान के ब कदर मेरी नेकियां मुज से ली गईं. (مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيحِ ج ٨ ص ٨١١، تَحْتِ الْحَدِيثِ ٥٠٨٣)

सात सो आ जमाअत नमाओं

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! अक पराया गेहूँ

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का भाईस है. (ابويطى)

बिगैर ईजाजत तोड देना भी नुकसाने क्रियामत का सबभ हो सकता है. अब सिर्फ गेहूं का दाना तोडने या भा जाने ही की कहां बात है. आज कल तो कई लोग बिगैर द्वा'वत के दूसरों के यहां भाना ही भा डालते हैं ! छालांके बिगैर बुलाओ किसी की द्वा'वत में घुस जाना शरून मन्अ है. अबू द्वावूद शरीफ की हदीसे पाक में येह भी है : “जो बिगैर बुलाओ गया वोह योर हो कर घुसा और गारत गरी कर के निकला.” (سُنُّنُ أَبِي دَاوُدَ ج ٣ ص ٣٤٩ حدیث ٣٤٢١) नीज आज कल कर्ज के नाम पर लोगों के छजारों बडके लाभों रुपै उडप कर लिये जाते हैं. अभी तो येह सब आसान लग रहा होगा लेकिन क्रियामत में बडोत महंगा पड जाओगा. औ लोगों का कर्ज दबा लेने वालो ! कान भोल कर सुनो ! मेरे आका आ'ला उजरत كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ नकल करते हैं : “जो दुन्या में किसी के तकरीबन तीन पैसे दैन (या'नी कर्ज) दबा लेगा बरोजे क्रियामत ईस के बदले सात सो भा जमाअत नमाजे देनी पड जाओगी.” (इतावा रजविय्या, जि. 25, स. 69) जो हां ! जो किसी का कर्ज दबा ले वोह जालिम है और सप्त नुकसान व ખુस्सान में है. उजरते सय्यिदुना सुलैमान तबरानी अपने मजमूअओ हदीस, “तबरानी” में नकल करते हैं : सरकारे मदीनओ मुनव्वरह, सरदारे मकओ मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया, जिस का मइलूम है : “जालिम की नेकियां मजलूम को, मजलूम के गुनाह जालिम को हिलवाओ जाओगे.”

(الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ ج ٢ ص ١٢٨ حدیث ٣٩٦٩ دار احیاء التراث العربی بیروت)

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुव्दह शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (مسند احمد)

अदाये कर्ज में बिला वजह ताप्पीर गुनाह है

कर्ज की बात यली है तो येह भी बताता यलूं के हुज्जतुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي कीमियाये सआदत में नकल करते हैं : “जो शप्स कर्ज लेता है और येह निव्यत करता है के मैं अख्ठी तरह अदा कर दूंगा तो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की डिफ़ाजत के लिये यन्द् इरिशते मुकर्रर इरमा देता है और वोह हुआ करते हैं के ईस का कर्ज अदा हो जाये.”

(انظر: اتحاف السادة للزبيدي ج ٦ ص ٣٠٩ دارالكتب العلمية بيروت) और अगर कर्जदार कर्ज अदा कर सकता हो तो कर्ज प्वाह की मरजी के बिगैर अेक घडी त्बर भी ताप्पीर करेगा तो गुनहगार होगा और जादिम करार पायेगा. प्वाह रोजे की हालत में हो या सो रहा हो उस के जिम्मे गुनाह लिषा जाता रहेगा. (गोया हर हाल में गुनाह का मीटर चलता रहेगा) और हर सूरत में उस पर अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की ला'नत पडती रहेगी. येह गुनाह तो औसा है के नीद की हालत में भी उस के साथ रहता है. अगर अपना सामान बेय कर कर्ज अदा कर सकता है तब भी करना पडेगा, अगर औसा नहीं करेगा तो गुनहगार है. अगर कर्ज के बढले औसी यीज दे जो कर्ज प्वाह को ना पसन्द हो तब भी देने वाला गुनहगार होगा और जब तक उसे राजी नहीं करेगा ईस जुल्म के जुर्म से नजात नहीं पायेगा क्यूंके उस का येह फ़ै'ल कबीरा गुनाहों में से है मगर लोग ईसे मा'मूली पयाल करते हैं.”

(کیمیائے سعادت ج ١ ص ٣٣٦)

قرمانے مستحق : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : توم جڈاں لمی ڈو موز پر دُرُود پڙو، کے تومبارا دُرُود موز تک پڙویاتا
ہے۔ (طیرانی)

گہرت مندی کا تکاوا

مہڈے مہڈے اِسلامی لمائےو ! جب متللم ڈوتا ہے تو ٲوشامد اور جڑے وا'دے کر کے لم'ج لوگ کڑاں ڈاسیل کر لےتے ہئں مگر افسوس سد کروز افسوس ! لے لےنے کے لم'د ادا کرنے کا نام نہی لےتے۔ گہرت مندی کا تکاوا تو یہل ہے کے جس سے کڑاں لیا ہے اپنے اس مہلسمن کے ځر جلد تر ج کر شکریا کے ساث کڑاں ادا کر آتے، مگر آج کل ڈالوت یہل ہے کے اگر کڑاں ادا کرنا لمی ہے تو کڑاں ٲواڈ کو ٲم ڈکے ٲللا کر، رولا رولا کر اس بےبارے کی رکم کو توڈ ڈوڈ کر یا'نی ڈوڈی ڈوڈی کر کے کڑاں لوڈاوا جاتا ہے۔ یاد رہیے ! لملا وجل کڑاں ٲواڈ کو ڈکے ٲللانا لمی زولم ہے۔ آم تہر ٲر بٲوٲارلیوں کی آدت ڈوتی ہے کے رکم گلے مں مہجھ ڈونے کے لم ووجھ شام کو لے جانا، کل آنا وگہرا کل کر لملا اِجائتے شرف ترٲاتے، ڈللاوتے اور ڈکے ٲللاوتے ہئں، یہل نہی سویتے کے دم کتنا بڈا وبال اپنے سر لے رلے ہئں ! اگر شام کو کڑاں یکانا ڈی ہے تو املی سلل کے وکت یکا دےنے مں ڈرل ڈی کلا ہے !

نکلیوں کے زریآ مالدار

مہڈے مہڈے اِسلامی لمائےو ! بنداں کی ڈک تلڈی آلمرلر کے لیلے بڈوت لیاڈا نکسان دےڈ ہے، ڈرتے سللڈنا اڈمد بمل ڈرل علیہ رآہ الہیہ فرماتے ہئں : کڈ لوگ نکلیوں کی کسیر دہلوت لیلے دُنلا سے مالدار رٲسٹ ڈوںگے مگر بنداں کی ڈک تلڈلیوں کے آاٹس کلامت کے دمل اپنی ساری نکلیاں ٲو بئوںگے اور یں گریب و نادار ڈو جآوںگے۔

(تنبیہ المعتبرین ص ۵۳ دارالمعرفة بیروت)

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अद्लाल के जिक्र और नबी पर दुर्इद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गये तो वोह बढबूदार मुदरि से उठे. (شعب الایمان)

उजरते सय्यिदुना शैफ अबू तालिब मुहम्मद बिन अली मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی “क़तुल कुलूब” में इरमाते हैं : “जियादा तर (अपने नहीं बल्के) दूसरों के गुनाह ही दोज़्म में दाबिले का बाईस होंगे जो (हुक़ुल ईबाद तलफ़ करने के सभब) ईन्सान पर डाल दिये जाअेंगे. नीज़ बे शुमार अइराद (अपनी नेकियों के सभब नहीं बल्के) दूसरों की नेकियां हासिल कर के जन्नत में दाबिल हो जाअेंगे.” (فُوتُ الْقُلُوبِ ج ۲ ص ۲۹۲) जाहिर है दूसरों की नेकियां हासिल करने वाले वोही होंगे जिन की दुन्या में हिल आजारियां और उक तलफ़ियां हुई होंगी. यूं बरोजे कियामत मजलूम और हुबियारे इाअेदे में रहेंगे.

अद्लाल व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ को ईजा देने वाला

हुक़ुल ईबाद का मुआमला बडा नाज़ुक है मगर आह ! आज कल बे बाकी का दौर दौरा है, अवाम तो कुज़ा खवास कडलाने वाले त्मी उमूमन ईस की तरफ़ से गाइल रहते हैं. गुस्से का मरज़ आम है ईस की वजह से अकसर “खवास” त्मी लोगों की हिल आजारी कर बैठते हैं और ईस की तरफ़ उन की बिदकुल तवज्जोह नहीं होती के किसी मुसल्मान की बिला वजह शर्ई हिल आजारी गुनाह व हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. मेरे आका आ'ला उजरत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی इतावा रजविध्या शरीफ़ जिल्द 24 सफ़हा 342 में तबरानी शरीफ़ के हवाले से नकल करते हैं : सुल्ताने दो जहान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का इरमाने ईब्रत निशान है : (یا'नी) जिस ने (बिला वजह शर्ई) किसी मुसल्मान को ईजा दी उस ने मुजे ईजा दी

ફરમાને મુસ્તકા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ छोगे. (جمع الجوامع)

और जिस ने मुजे धजा दी उस ने अद्लाह एज़ज़ल को धजा दी.”

عَزَّوَجَلَّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ٢ ص ٣٨٤ حديث ٣٦٠٤)

को धजा देने वालों के बारे में अद्लाह एज़ज़ल पारह 22 सूरेतुल अहज़ाब

आयत 57 में धशाह फ़रमाता है :

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ
عَذَابًا مُهِينًا ﴿٥٧﴾

तरजमअे क-जुल धमान : बेशक जो धजा देते हैं अद्लाह (एज़ज़ल) और उस के रसूल को उन पर अद्लाह (एज़ज़ल) की ला'नत है दुन्या व आभिरत में और अद्लाह (एज़ज़ल) ने उन के लिये जिल्लत का अज़ाब तय्यार कर रखा है.

दिल खिला देने वाली धारिश

ध्यारे ध्यारे धस्वामी भाधयो ! अगर आप कभी किसी मुसल्मान की बिला वजहे शर्ध धिल आज़ारी कर बैठे हैं तो आप का याहे उस से कैसा ही करीबी रिश्ता है, बडे भाध हैं, वालिद हैं, शौहर हैं, सुसर हैं या कितने ही बडे रुत्बे के मालिक हैं, याहे सदर हैं या वज़ीर हैं, उस्ताज़ हैं या पीर हैं, या मुअज़्ज़िन हैं या धमाम व धतीब हैं जो कुध भी हैं बिगैर शरमाअे तौबा भी कीजिये और उस बन्दे से मुआफ़ी मांग कर उस को राज़ी भी कर लीजिये वरना जहन्नम का डोलनाक अज़ाब बरदाश्त नही हो सकेगा. सुनो ! सुनो ! डज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन शजरह ढ़रमाते हैं : जिस तरह समुन्दर के कनारे डोते हैं धसी तरह जहन्नम के भी कनारे हैं जिन में बुप्ती डोटों जैसे सांप और धय्यरों जैसे बिख़रू रहते हैं. अडले जहन्नम जब अज़ाब में कमी के

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरद शरीफ़ पढो, अद्वलाद رُبُّوَلُ تُم पर रहमत भेजेगा।

(ابن عدی)

दिये इरियाद करेंगे तो हुल्म डोगा कनारों से बाहर निकलो वोड शूँ डी निकलेंगे तो वोड सांप उन्हें डोंटों और येडरों से पकड लेंगे और उन की भाल तक उतार लेंगे वोड डोग वडों से बयने डे दिये आग की तरफ़ भार्गेंगे फिर उन पर भुजली मुसद्वत कर दी ज़ाभेगी वोड इस कदर भुजभेंगे डे उन का गोशत पोस्त सब जड ज़ाभेगा और सिर्फ़ डडियां रह ज़ाभेगी, पुकार पडेगी : “अै डुलां ! क्या तुजे तकलीफ़ डो रही है ?” वोड कडेगा : डं. तो कड ज़ाभेगा “येड उस र्ज्जा का बदला है ज़ो तू भोभिनों डो दिया करता था.” (التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج ٢ ص ٢٨٠ حدیث ٥٦٣٩ دارالفکر بیروت)

जन्त में धूमने वाला

भीठे भीठे र्स्लामी भाईयो ! मुसल्मान डो र्ज्जा डेना मुसल्मान का काम नडीं बडके उस का काम तो येड है डे मुसल्मान से र्ज्जा डेने वाली र्जीजें दूर करे. सय्यिदुना र्भाम मुस्लिम भिन डज्जज कुशैरी सडीड मुस्लिम में नकल करते हैं : ताजदारे मदीना, करारे कलभो सीना, डैजे गन्जना, साडिभे मुअत्तर पसीना, भाईसे नुजूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने भा करीना है : “में ने अेक शप्स डो जन्त में धूमते डुअे डेभा डे जिधर याडता है निकल ज़ाता है कयूँडे उस ने र्स हुन्या में अेक अैसे दरप्त डो रास्ते से काट दिया था ज़ो डे डोगों डो तकलीफ़ डेता था.” (صَحِيْحُ مُسْلِمٍ ص ١٣١٠ حدیث ٢١١٤)

आका डी भे र्न्तडा आजिडी

डभारे प्यारे और भीठे भीठे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने उस्वअे डसना डे डरीअे डम गुलामों डो डुकूकुल र्भूड का भयाल रहने

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : मुज पर दुरुद पढ कर अपनी मजलिस को आरास्ता करो के तुम्हारा दुरुद पढना बरोजे क्रियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

की जिस हसीन अन्दाज में ता'लीम दी है उस की ऐक रिक्त अंगेज जलक मुलाहजा इरमाईये. युनान्ये हमारे जान से ली प्यारे आका मक्की मदनी मुस्तफा ﷺ ने वफाते जाहिरि के वक्त इजतिमाये आम में ऐ'लान इरमाया : अगर मेरे जिम्मे किसी का कर्ज आता हो, अगर मैं ने किसी की जान व माल और आबइ को सदमा पड़ोयाया हो तो मेरी जान व माल और आबइ हाजिर है, “इस दुन्या में बढला ले ले.” तुम में से कोई येह अन्देशा न करे के अगर किसी ने मुज से बढला लिया तो मैं नाराज हो जाउंगी येह मेरी शान नही. मुजे येह अम्र बहोत पसन्द है के अगर किसी का हक मेरे जिम्मे है तो वोह मुज से वुसूल कर ले या मुजे मुआफ़ कर दे. फिर इरमाया : ऐ लोगो ! जिस शप्स पर कोई हक हो उसे याहिये के वोह अदा करे और येह भयाल न करे के रुस्वाई होगी इस लिये के दुन्या की रुस्वाई आभिरत की रुस्वाई से बहोत आसान है.

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۳۸ ص ۳۲۳ مُلَخَّصًا)

मैं ने तेरा कान मरोडा था

हजरते सय्यिदुना उस्माने गनी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने ऐक गुलाम से इरमाया : मैं ने ऐक मर्तबा तेरा कान मरोडा था इस लिये तू मुज से उस का बढला ले ले.

(الرِّيَاضُ النَّصْرَةُ فِي مَنَاقِبِ الْعَشْرَةِ، جُزء ۳ ص ۳۵ دارالكتب العلمية بيروت)

मुसल्मान की ता'रीफ़

अद्लाह के मडबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्जहुन अनिल उयूब
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने डिदायत निशान है : (कामिल) मुसल्मान
 वोह है जिस की ज्बान और हाथ से मुसल्मान को तकलीफ़ न पड़ोये

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : शब्द जुमुआ और रोजे जुमुआ मुज पर कसरत से दुरद पढो क्यूंके तुम्हारा दुरद मुज पर पेश किया जाता है. (طبرانی)

और (कामिल) मुहाजिर वोह है जो उस चीज को छोड दे जिस से अद्लाह तआला ने मन्अ इरमाया है. (صَحِيحُ الْبُخَارِي ج ١ ص ١٥٠ حدیث ١)

ईस हदीसे पाक के तहत मुफ़सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुफ़्ती अहमद यार ખान عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ इरमाते हैं के “कामिल मुसल्मान वोह है जो लुगतन शरूअन हर तरह मुसल्मान हो (और) मोमिन वोह है जो किसी मुसल्मान की गीबत न करे, गाली, ता’ना, युगली वगैरा न करे, किसी को न मारे पीटे, न उस के खिलाफ़ कुछ तहरीर करे.” मज़ीद इरमाते हैं के “कामिल मुहाजिर वोह मुसल्मान है जो तर्के वतन के साथ तर्के गुनाह भी करे, या गुनाह छोडना भी लुगतन हिजरत है जो हमेशा जारी रहेगी.” (मिरआतुल मनाज्जह, जि. 1, स. 29)

मुसल्मान को धूरना, डराना

सरकारे मदीनअे मुनव्वरह, सरदारे मक्कअे मुकर्रमा صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : मुसल्मान के लिये जाईज नहीं के दूसरे मुसल्मान की तरफ़ आंख से ईस तरह ईशारा करे जिस से तकलीफ़ पछोये. (اتحاف السادة للزبيدي ج ٤ ص ١٤٤) अेक मकाम पर ईशाद इरमाया : किसी मुसल्मान को जाईज नहीं के वोह किसी मुसल्मान को भौंफ़टा करे.

(سُنَنُ أَبِي دَاوُدَ ج ٢ ص ٣٩١ حدیث ٥٠٠٣ دار احیاء التراث العربی بیروت)

भीठे भीठे ईस्लामी त्माईयो ! मा’लूम हुवा के मुसल्मान दूसरे मुसल्मान का मुहाजिज और गम प्वार होता है, आपस में लडना जगडना येह मुसल्मान का शेवा नहीं बल्के ईस से बडोत बडे बडे नुकसानात हो जाते हैं जैसा के हजरते सय्यिदुना शैख मुहम्मद बिन

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अेक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रउमते मेजता है. (مسلم)

ईस्माईल बुभारी رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي عَلَيْهِ अपने मजमूअमे अहादीस अल मौसूम “सहीह बुभारी” में नकल करते हैं : उजरते सय्यिदुना उबादा बिन सामित صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाते हैं : मक्की मदनी आका बाहर तशरीफ़ लाअे ताके हमें शबे कद्र अताअें के किस रात में है, दो मुसल्मान आपस में जगउ रहे थे, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : में ईस लिये आया था के तुम्हें शबे कद्र अताओं मगर कुलां कुलां शप्स जगउ रहे थे ईस लिये ईस का तअय्युन उठा लिया गया.

(صَحِيحُ الْبُخَارِي ج ١ ص ٢٦٢ حديث ٢٠٢٣)

हम शरीफ़ के साथ शरीफ़ और.....

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! ईस उदीसे मुबारका में हमारे लिये जबरदस्त दर्से ईअ्रत है के हमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ शबे कद्र की निशान देही इरमाने ही वाले थे के दो मुसल्मानों का बाहम लउना मानेअ (या'नी रुकावट) हो गया और हमेशा हमेशा के लिये शबे कद्र को मफ़्ही (या'नी पोशीदा) कर दिया गया. ईस से अन्दाजा कीजिये के आपस का जगडा किस कदर नुकसान देह है. मगर आह ! जगडालू मिजाज के लोगों को कौन समजाअे ? आज कल तो बा'ज मुसल्मान अडे इअ्र से येह कडते सुनाई दे रहे हैं के “मियां ईस दुन्या में शरीफ़ रह कर गुजारा ही नहीं, हम तो शरीफ़ों के साथ शरीफ़ और बढ मआशों के साथ बढ मआश हैं !” और सिर्फ़ कडने पर ल्मी ईक्तिफ़ा थोडे ही है ! असा अवकात तो मा'भूली सी बात पर पडले जवान दरअी, फिर दस्त

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : उस शप्स की नाक भाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक हो और वो ह मुज पर दुरेदे पाक न पडे. (ترمذی)

अन्दाजी, फिर याकू बाजी बटके गोलियां तक चल जाती हैं. सह करोड अफ़सोस ! आज के बा'ज मुसल्मान भा वुजूद मुसल्मान होने के कत्मी पठान बन कर, कत्मी पंजाबी कडला कर, कत्मी सराअेकी बन कर कौमिय्यत का ना'रा लगा कर अेक दूसरे का गला काट रहे हैं, दुकानों और गाडियों को आग लगा रहे हैं, मुसल्मानो ! आप तो अेक दूसरे के मुहाफ़िज थे, आप को क्या हो गया है ? हमारे प्यारे आका, रहमतों वाले मुस्तफ़ा ﷺ का फ़रमाने आलीशान तो ये ह है के "बाहम महब्बत व रहम व नरमी में मोमिनों की मिसाल अेक जिस्म की तरह है के अगर अेक उजूव को तकलीफ़ पड़ोये तो सारा जिस्म उस तकलीफ़ को महसूस करता है."

(صحيح مسلم ص ۱۳۹۶ - حدیث ۲۵۸۶)

अेक शाईर ने कितने प्यारे अन्दाज में समजाया है :

मुब्तलाअे दद कोई उजूव हो रोती है आंभ

किस कदर हमदद सारे जिस्म की होती है आंभ

जो भुराई करे उस पर भी जुल्म न करो

"तिरमिजी शरीफ़" की रिवायत में है के सरकारे मदीना, करारे कलभो सीना ﷺ का फ़रमाने भा करीना है : "तुम लोग नक्काल न बनो के कडो अगर लोग भलाई करेंगे तो हम भी भलाई करेंगे और अगर लोग जुल्म करेंगे तो हम भी जुल्म करेंगे, लेकिन अपने नफ़स को करार हो के लोग भलाई करें तो तुम भी भलाई करो और लोग भुराई करें तो तुम जुल्म न करो." (سُنُّنُ التِّرْمِذِيِّ ج ۳ ص ۴۰۵ - حدیث ۲۰۱۴)

इरमाने मुस्तक। صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर दस भरतभा दुइदे पाक पढे अद्लाह उस पर सो रहमतें नाजिल इरमाता है. (طبرانی)

पराई कलम लौटाने के लिये सइर

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! हमारे प्यारे आका

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हमें मुसल्मानों की हमदई करने के तअद्लुक से कितने प्यारे मदनी इल ईनायत इरमाअे हैं. हमारे बुजुगानि दीन رَحْمَهُمُ اللهُ الْمُبِين दूसरों के डुकूक के मुआमले में ईन्तिहाई दरजे हस्सास डोते थे और अदाईगिये डक के मुआमले में हैरत अंगेज डद तक मोडतात बी. युनान्चे डजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मुल्के शाम में यन्द रोज के लिये मुकीम हुअे, वहां अडादीसे मुबारका लिपते रहे. अेक बार उन का कलम टूट गया लिडाजा आरियतन (या'न वक्ती तौर पर) किसी और से कलम डसिल किया, वापसी पर भूले से वो ड कलम वतन साथ लेते आअे. जब याद आया तो सिई कलम वापस देने के लिये आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने वतन से मुल्के शाम का सइर किया.

(तजक़िरतुल वाईजीन स. 243)

बिगैर ईजाजत किसी की यप्पल पडनना कैसा ?

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ! سُبْحَانَ اللهِ ! हमारे अस्लाह رَحْمَهُمُ اللهُ تَعَالَى पराई यीज के मुआमले में अद्लाह तआला से किस कदर डरते थे ! मगर अइसोस ! अब डम ईस सिव्सिले में बिदकुल बे भौइ डोते जा रहे हैं ! याद रपिये ! अमी तो दूसरों की यीजें जान भूज कर रप लेना बडोत आसान मा'लूम डोता है मगर डियामत में साडिबे डक को ईस का बदला युकाना और उस को राजी करना बडोत डी मुश्किल डो जाअेगा लिडाजा दूसरों के अेक अेक दाने और अेक अेक तिन्के

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જિસ કે પાસ મેરા ઝિક હુવા ઓર ઉસ ને મુઝ પર દુરુદે પાક ન પઢા તહકીક વોહ બદ બપ્ત હો ગયા. (ابن سنی)

કે બારે મેં એહતિયાત કરની યાહિયે, બિગૈર ઇજાઝત કિસી કી કોઈ ચીઝ મસલન યાદર, તોલિયા, બરતન, ચારપાઈ, કુરસી વગૈરા વગૈરા હરગિઝ ઇસ્તિ'માલ નહીં કરની યાહિયે હાં અગર ઇન ચીઝોં કે માલિક કી તરફ સે ઇઝને આમ હો તો ઇસ્તિ'માલ કરને મેં હરજ નહીં. મસલન કિસી કે ઘર મેહમાન બન કર ગએ તો ઉમૂમન ઇસ તરહ કી ચીઝોં કે ઇસ્તિ'માલ કી સાહિબે ખાના કી તરફ સે છૂટ હોતી હૈ. અકસર દેખા જાતા હૈ કે મસ્જિદ મેં બા'ઝ લોગ બિગૈર ઇજાઝતે માલિક ઉસ કી ચપ્પલેં પહન કર ઇસ્તિ'જાખાને ચલે જાતે હેં. બ ઝાહિર યેહ અમલ બહોત હી મા'મૂલી લગ રહા હૈ મગર ઝરા સોચિયે તો સહી ! આપ કિસી કી ચપ્પલેં પહન કર ઇસ્તિ'જાખાને તશરીફ લે ગએ ઓર ઉસ કા માલિક બાહર જાને કે લિયે અપની ચપ્પલોં કી તરફ આયા, ગાઈબ પા કર યેહ સમઝ કર કે ચોરી હો ગઈ બેચારા દિલ મસોસ કર રહ ગયા ઓર નંગે પાઉં હી ચલા ગયા. આપ ને અગર્યે વાપસ આ કર ચપ્પલેં જહાં સે લી થીં વહીં રખ દીં મગર ઉસ કા માલિક તો ઉન્હેં ઝાએઝ કર ચુકા. ઇસ કા વબાલ કિસ પર ? યકીનન આપ પર ઓર આપ હી ઝાલિમ ઠહરે. આહ ! બરોઝે કિયામત ઝાલિમ કી હસરત ! હઝરતે સચ્ચિદુના શૈખ અબ્દુલ વહ્હાબ શા'રાની ફરમાતે હેં : “બસા અવકાત એક હી ઝુલ્મ કે બદલે ઝાલિમ કી તમામ નેકિયાં લે કર ભી મઝલૂમ ખુશ ન હોગા.” (تَنْبِيهُ الْمُعْتَرِبِينَ ص ٥٠) જભી તો હમારે બુઝુગાને દીન رَحْمَةُ اللهِ الْبُيِّنَاتِ બ ઝાહિર મા'મૂલી નઝર આને વાલી બાતોં મેં ભી એહતિયાત ફરમાતે થે. હુજ્જતુલ ઇસ્લામ હઝરતે સચ્ચિદુના ઇમામ મુહમ્મદ બિન મુહમ્મદ ગઝાલી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی ફરમાતે હેં :

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर सुबुह व शाम दस दस बार दुर्रदे पाक पढा उसे कियात के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

पुशबू सूंघने में अेलतियात

उजरते अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के सामने मुसल्मानों के लिये मुश्क का वज़ून किया जा रहा था, तो उन्हों ने फ़ौरन अपनी नाक बन्द कर ली ताके उन्हें पुशबू न पड़ोये जब लोगों ने येह बात महसूस की तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरमाया : पुशबू सूंघना ही तो इस का नफ़्अ है. (यूके मेरे सामने इस वक्त वाफ़िर मिकदार में मुश्क भौजूह है लिहाजा इस की पुशबू भी जियादा आ रही है और मैं इतनी जियादा पुशबू सूंघ कर दीगर मुसल्मानों के मुकाबले में जाईद नफ़्अ हासिल करना नहीं चाहता.)

(احياء العلوم ج ٢ ص ٢١، قُوْتُ القلوب ج ٢ ص ٥٣٣)

अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सहके हमारी मग़्फ़िरत हो.

اٰمِيْن بِجَاٰهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

यराग बुजा दिया !

“डीमियाअे सआदत” में है : अेक बुजुर्ग रात के वक्त किसी मरीज के सिरहाने तशरीफ़ इरमा थे, कजाअे इलाही عَزَّوَجَلَّ से वोह भीमार फ़ौत हो गया, कुरबान जाईये उन बुजुर्ग की मदनी सोय पर के उन्हों ने फ़ौरन यराग गुल कर दिया और इरमाया : “अब इस यराग के तेल में वारिसों का हक भी शामिल हो गया है.” (كيمياء سعادت ج ١ ص ٣٧٤)

अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सहके हमारी मग़्फ़िरत हो.

اٰمِيْن بِجَاٰهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दृष्ट शरीफ़ न पढा (उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

भाग या जहन्नम का गढा

अव्वाह ! अव्वाह ! हमारे बुजुगानि दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِينِينَ कितनी अजीम मदनी सोय के मालिक होते थे ! हम तो औसा सोय भी नहीं सकते औलियाअे किराम हर वक्त पौड़े फुदा عَزَّوَجَلَّ से लरजां व तरसां रहा करते हैं, हर दम मौत उन के पेशे नजर रहती, कब्रो हशर के मुआमलात से कभी गाइल नहीं होते. आह ! कब्र का मुआमला बे धन्तिहा तशवीशनाक है ! हाअे हमारा क्या बनेगा ! हम तो अपनी कब्र को यकसर तूले हुआ हैं “अेहयाउल उलूम” में है : हजरते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : “जो शप्स कब्र को अकसर याद करता है वोह मरने के आ’द अपनी कब्र को जन्नत के बागों में से अेक भाग पाअेगा और जो कब्र को त्मुला देगा वोह अपनी कब्र को जहन्नम के गढों में से अेक गढा पाअेगा.” (احياءُ العلوم ج ٢ ص ٢٣٨)

गोरे नेकां भाग होगी फुल्ह का

मुजरिमों की कब्र दोउष का गढा

आधी भजूर

याद रभिये ! अपने छोटे छोटे मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों के भी हुकूक का जयाल रभना होता है. ईस मुआमले में बे अेहतियाती बाईसे हलाकत और अेहतियात सबअे दुभूले जन्नत है. युनान्थे हजरते सय्यिदुना मुहम्मद बिन ईस्माईल बुजारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने मजमूअअे अहादीस, अल मौसूम, “सहीह बुजारी” में नकल करते हैं : उम्मुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना आईशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने

इरमाने मुस्तफ़ा. عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمُ وَاٰلِهِمْ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोले जुमुआ दुरद शरीफ़ पढेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा. (جمع الجوامع)

इरमाया : अेक औरत जिस के साथ दो बख़ियां थीं, उस ने आ कर मुज से सुवाल किया (या'नी मुज से कुछ मांगा), मेरे पास उस वक्त सिर्फ़ अेक भजूर थी वोह मैं ने उस को दे दी उस ने भजूर के दो टुकडे कर के दोनों को अेक अेक टुकडा दे दिया. जब सय्यिदतुना आईशा सिदीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अद्लाह के भलभूभ, दानाअे गुयूभ, मुनज़्जहुन अनिल उयूभ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ की भिदमत में येह वाक्रिया अर्ज किया तो इरमाया : “जिस को लडकियां अता हुई और उस ने उन के साथ अख़्ण सुलूक किया तो येह उस के लिये जहन्नम से आड बन जाअेगी.” (صحيح البخارى ج ٣ ص ٩٩ حديث ٥٩٩٥)

शाही थप्पड का अन्जाम

अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना उमर फ़ाउके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हुकुकुल ईबाद के मुआमले में किसी की रिआयत न इरमाते थे. युनाअे शाहे गस्सान नया नया मुसल्मान हुवा था और उस से हजरते सय्यिदुना फ़ाउके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को बहोत जियादा भुशी हुई थी क्यूंके उस के सबभ अब उस की रिआया के ईमान लाने की उम्मीद पैदा हो गई थी. दौराने तवाफ़ शाहे गस्सान के कपडे पर किसी गरीब आ'राबी का पाउं आ गया, गुस्से में आ कर उस ने अैसा जोरदार तमांया मारा के आ'राबी का दांत शहीद हो गया. उस ने सय्यिदुना उमर फ़ाउके आ'उम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की बारगाह में इरियाद की. शाहे गस्सान ने तमांया मारने का अे'तिराफ़ किया तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुदई या'नी उस मजलूम आ'राबी से इरमाया के आप शाहे गस्सान से किसास या'नी बदला ले सकते हैं. येह सुन कर शाहे गस्सान ने भुरा

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा (उस ने जन्नत का रास्ता छोड दिया. (طبرانی)

मानते हुआ कडा के अक मा'भूली शप्स मुज जैसे बादशाह के बराबर कैसे हो गया जो इस को मुज से बदला लेने का हक हासिल हो गया ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : इस्लाम ने तुम दोनों को बराबर कर दिया है. शाहे गरसान ने किसास के लिये अक दिन की मोहलत ली और रात के वक्त निकल भागा और मुरतद हो गया.

(भुत्भाते मुहर्रम, स. 138, शब्बीर बिरादज)

झड़के आ'जम की सादगी

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! हजरते सय्यिदुना झड़के आ'जम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने शाहे गरसान जैसे बादशाह की जर्ा बराबर ली रियायत न इरमाई और उस बढ नसीब के इस्लाम से फिर कर दोबारा कुफ़ के गढे में कूद जाने से इस्लाम को ली कोई नुकसान न पड़ोया. बढके अगर हजरते सय्यिदुना झड़के आ'जम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ रियायत इरमा देते तो शायद इस्लाम को जरर (या'नी नुकसान) पड़ोयता और लोगों का इस तरह जेहन बनता के इस्लाम कमजोर को ताकतवर से كَمَّ اللهُ عَلَيْهِمْ هُكْمٌ हक नहीं दिल्वा सकता. येह आदिलाना निजाम ही की बरकत थी के अक रोज हजरते सय्यिदुना झड़के आ'जम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ बिगैर किसी मुहाकिम के बे भौड़ व भतर गरमी के मौसिम में अक दरप्त के नीचे पत्थर पर अपना मुबारक सर रख कर सो रहे थे के इम का कासिद उन की तलाश में धर आ निकला और उन्हें इस तरह सोता देख कर हैरान रह गया के क्या येही वोह शप्स है जिस से सारी दुन्या लरजा भर अन्दाम है ! फिर वोह भोल उठा : औ उमर ! आप अहद करते हैं, हुकुकुल इबाद का

इरमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुव्दे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज पर दुव्दे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाईस है. (ابو يعلى)

भयाल रभते हैं तो आप को पत्थरों पर भी नींद आ जाती है और हमारे बादशाह जुल्म करते हैं बन्दों के हुकूक पामाल करते हैं लिहाजा उन्हें मज्मलीं बिस्तरों पर भी नींद नहीं आती.

अद्लाह ﷻ की उन पर रहमत हो और उन के सढके हमारी मग्दिरत हो.

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

बुरे भातिमे के अस्बाब

जुल्म की नुहूसत भी तो देषिये “शाहे गस्सान” का इमान ही बरबाद हो गया ! हमरते सय्यिदुना अबूबक वर्राक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं : “बन्दों पर जुल्म करना अकसर सलबे इमान का सभब बन जाता है.” हमरते सय्यिदुना अबुल कासिम उकीम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से किसी ने पूछा : कोई अैसा गुनाह भी है जो बन्दे को इमान से मडरुम कर देता है ? इरमाया : बरबादिये इमान के तीन अस्बाब हैं : (1) इमान की ने'मत पर शुक न करना (2) इमान जाअेअ होने का षौइ न रभना (3) मुसल्मान पर जुल्म करना.

(تَنْبِيهُ الْعَافِيَيْنِ ص २०३)

भुद को किसी का “गुलाम” कडना कैसा ?

हमारे बुजुगाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللهُ الْمُبِينُ ने हुकूकुल इबाद के मुआमले में अेहतियात की अैसी मिसालें काईम की हैं के अकल हैरान रह जाती है. युनान्चे इमामे आ'जम, इकीडे अइभम हमरते सय्यिदुना इमाम अबू उनीइ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के मशहूर शागिर्द काजियुल कुआह या'नी

इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कजूस तरीन शप्स है. (सन्द अहमद)

(CHIEF JUSTICE) हजरते सय्यिदुना **ईमाम अबू यूसुफ़** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पलीफ़ा **हार्नुरशीद** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيدِ के मो'तमद (या'नी काबिले अ'तिमाद) वजीर इज़्ल बिन रबीअ की गवाही कबूल करने से ईन्कार कर दिया. पलीफ़ा **हार्नुरशीद** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيدِ ने जब गवाही कबूल न करने का सबब दरयाफ़्त किया तो इरमाया : अेक बार में ने फ़ुद अपने कानों से सुना के वोह आप से कह रहा था : "मैं आप का गुलाम हूं" अगर वोह ईस कौल में सय्या था तो वोह आप के हक में गवाही देने के लिये ना अहल हुवा क्यूं के आका के हक में गुलाम की गवाही ना मकबूल है और अगर बतौरे फ़ुशामद ईस ने जूट बोला था तब त्मी ईस की गवाही कबूल नहीं की जा सकती के जो शप्स आप के दरबार में बेबाकी के साथ जूट बोल सकता है वोह मेरी अदालत में जूट से कब बाज़ रहेगा !

क्या डाल है ?

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने ? हजरते सय्यिदुना **ईमाम अबू यूसुफ़** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ किस कदर जेडीन थे और अह्ल हो तो औसा के किसी बन्दे के हक के मुआमले में निहायत ही बेबाकी के साथ पलीफ़ा वक्त के हक में उस के पास वजीर की गवाही त्मी मुस्तरद कर दी. यहां वाकेई अेक नुक्ता काबिले गौर है के बसा अवकात फ़ुशामदाना तौर पर या यूं ही बे सोये समजे अपने आप को अेक दूसरे का फ़ादिम या गुलाम या सग वगैरा बोल दिया जाता है मगर दिल् ईस के बिदकुल उलट होता है, काश ! दिल् व ज़बान यकसां हो जाअें. हमारे अस्लाफ़

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَضْفًا ۖ وَعَلَى اللَّهِ تَعَالَىٰ عَيْنِيَّوَالِهٖ وَسَلَّمَ﴾ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुर्रद पढो, के तुम्हारा दुर्रद मुझ तक पहाँयता है. (طبرانی)

दिल और ज़बान की यकसानियत का ज़होत ज़ियादा ज़याल रज़ते थे युनाय्ते ँमामुल मुअज़्ज़िरीन हज़रते सय्यिदुना ँमाम मुहम्मद ँब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرُ ने अेक शप्स से पूछा : क्या डाल है ? वोड डोला : “उस का क्या डाल डोगा जिस पर पांय सो दिरहम कर्ज डो, डाल डय्येदार डो डगर पदले कुछ न डो.” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ येड सुन कर धर तशरीफ़ लाअे और अेक डज़ार दिरहम ला कर उस को पेश करते हुअे डरमाया : “पांयसो दिरहम से अपना कर्ज अदा कर दीजिये और डज़ीद पांयसो अपने धर डर्य के लिये कडूल डरमाँये. ँस के डा’द आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ ने अपने दिल में अडद किया के आयन्दा किसी का डाल दरयाइत नडीं कडूंगा. हुज्जतुल ँस्लाम हज़रते सय्यिदुना ँमाम मुहम्मद डिन मुहम्मद गज़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرُ डरमाते हैं : ँमाम ँब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرُ ने येड अडद ँस लिये किया के अगर मैं ने किसी का डाल पूछा और उस ने अपनी परेशानी डताँ ड़िर अगर मैं ने उस की डदद नडीं की तो मैं पूछने के मुआडले में “मुनाड़िक” डहडूंगा.”

(کیمیائے سعادت ج ۱ ص ۴۰۸ انتشارات گنجینه تهران)

मुनाड़िक डहडूंगा की वज़ाडत

डीडे डीडे ँस्लामी डाँयो ! देडा आप ने ! डडारे अस्लाइ कितने डरे और सय्ये हुवा करते थे, उन का डेडून येड था के जब तक सामने वाले से डकीकी डा’नों में डडदई का ज़डा न डो उस

ફરમાને મુસ્તફા! عَلَيَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे ज़ुमुआ द्यो सो बर दुरद पक पढा उस के द्यो सो सल के गुनाह मुआफ़ डोंगे. (جمع الجوامع)

કબ્ર સે શો'લે ઉઠ રહે થે !

ખલીફએ આ'લા હઝરત ફકીહે આ'ઝમ હઝરતે અલ્લામા અબૂ યૂસુફ મુહમ્મદ શરીફ કોટલવી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي અપની કિતાબ “અખ્લાકુસ્સાલિહીન” મેં નક્લ કરતે હેં : અબૂ મૈસરહ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ફરમાતે હેં : એક કબ્ર સે શો'લે ઉઠ રહે થે ઓર મચ્ચિત કો અઝાબ હો રહા થા, મુદે ને પૂછા : મુઝે ક્યૂં મારતે હો ? ફિરિશતોં ને કહા કે એક મઝલૂમ ને તુઝ સે ફરિયાદ કી મગર તૂને ઉસ કી ફરિયાદ રસી નહીં કી ઓર એક દિન તૂને બે વુઝૂ નમાઝ પઢી. (اخلاق الصّالحين ص ۵۷، تَنْبِيهُ الْمُعْتَرِينَ ص ۵۱)

મુસલ્માનોં કા ગમ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! યેહ તો ઉસ શખ્સ કા હાલ હૈ જો મઝલૂમ કી મદદ પર કુદરત હોને કે બા વુજૂદ ઉસ કી મદદ નહીં કરતા તો ખુદ ઝાલિમ કા ક્યા હાલ હોગા ! મા'લૂમ હુવા કે મઝલૂમ કી હત્તલ વસ્અ મદદ કરની ચાહિયે ઓર મઝલૂમ કી મદદ કરને મેં બહોત અજરો સવાબ હૈ. હમારે બુઝુગાને દીન رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُبِينِ કો મુસલ્માનોં કી તકાલીફ કા કિસ કદર એહસાસ થા ઈસ કા અન્દાઝા “કીમિયાએ સઆદત” મેં બયાન કર્દા ઈસ હિકાયત સે કીજિયે યુનાન્યે એક મર્તબા લોગોં ને દેખા કે હઝરતે સચ્ચિદુના ફુઝૈલ બિન ઈયાઝ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ રો રહે હેં, જબ રોને કી વજહ દરયાફત કી ગઈ તો ફરમાયા : મેં ઉન બેચારે મુસલ્માનોં કે ગમ મેં રો રહા હૂં જિન્હોં ને મુઝ પર મઝાલિમ કિયે હેં કે કલ બરોઝે

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरद शरीफ़ पढो, अदवाउद तुम पर रहमत भेजेगा.

(ابن عدي)

क्रियामत जब उन से सुवाल होगा के तुम ने औसा क्यूं क्रिया ? उन का कोर उजूर न सुना जायेगा और वोह जलील व रुस्वा होंगे.

(किमियाँ सैदात ज 1 ص 393)

योर का गम

अेक बुजुर्ग का वाक्रिया है के उन की रकम क्रिसी ने निकाल ली थी और वोह रो रहे थे लोगों ने हमददी का र्छजहार क्रिया तो इरमाने लगे : में अपनी रकम के गम में नहीं बलके योर के गम में रो रहा हूं के कल क्रियामत में बेयारा बतौरे मुजरिम पेश क्रिया जायेगा उस वक्त उस के पास कोर उजूर नहीं होगा. आह ! उस वक्त उस की क्रितनी रुस्वाई होगी.

योरी का अजाब

योर की बात निकली तो योरी का अजाब भी अर्ज करता यलूं इकील अबुदलैस समर कन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي “कुरतुल उयून” में नकल करते हैं : जिस ने क्रिसी का थोडा सा माल भी युराया वोह क्रियामत के रोज उस माल को अपनी गरदन में आग के तौक (हार) की शकल में लटका कर आयेगा. और जिस ने थोडा सा भी माले हराम ढाया उस के पेट में आग सुल्वाई जायेगी और वोह र्स कदर ढौंरनाक यीभें मारेगा के जितने लोग अपनी कर्त्रों से उठेंगे कांप जायेंगे यहां तक के ढुदाये अहूकमुल हाक्रिमीन لَوْ جُ لَوْ लोगों के सामने जो भी कैसला इरमाये.

(قُرَّةُ الْعُيُونِ ص 392)

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुज पर कसरत से दुरुद पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरुद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज्किरत है. (ابن عساکر)

गुनाहों के मरीजों का इलाज करने वालों के लिये मदनी इ्ल

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! बात यही थी मुसल्मानों का गम जाने की और हमारे बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُ اللّٰهِ تَعَالٰی मुसल्मानों के गुनाहों के सबब होने वाले डोलनाक अजाब के मुतअद्लिक गौर कर के उन पर रद्म करते, उन के लिये गमगीन होते और उन की इस्लाह के लिये कुढते थे. हमें भी मुसल्मानों की हमदर्दी और गम गुसारी करनी याहिये, इन की इस्लाह के लिये हर दम कोशां रहना याहिये और इस में हौसला बडा रपना और हिकमत अमली से काम लेना याहिये. इस जिम्न में हमें डॉक्टर के तरीके कार से समजने की कोशिश करनी याहिये जैसा के कउवी दवा और इन्जेकशन वगैरा के सबब मरीज अगर डॉक्टर से कतराता भी है तब भी डॉक्टर उस से नफ़रत नहीं बल्के प्यार ही से पेश आता है इसी तरह गुनाहों का मरीज याहे हमारा मजाक उडाओ, प्वाह हम पर इब्तियां कसे हमें भी हिम्मत नही हारनी याहिये, अगर हम सँथे पैहम करते रहेंगे और मैदाने अमल से भागने वालो को दा'वते इस्लामी के मदनी काङ्गिलों में सङ्कर के आदी बनाने में काम्याब हो जाँगे तो ۞ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ गुनाहों के मरीज ज़रूर शिफ़ायाब होते यले जाँगे.

मुप्तलिङ्ग हुकूक सीपने का तरीका

याद रभिये ! बन्दों के हुकूक के मुआमले में वालिदैन का मुआमला सरे इेहरिस्त है इस की तङ्गीली मा'लूमात मकतबतुल मदीना का ज़री कर्दा बयान का ओडियो केसेट “मां बाप को सताना हराम है” और निगराने

इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने किताब में मुज पर दुव्हे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिस्कार (या'नी बख्शिश की हुआ) करते रहेंगे. (طبرانی)

शूरा की VCD “मां बाप के छुक्क” समाखत इरमाईये. ईसी तरह औलाह के छुक्क, मियां बीवी के छुक्क, कराबत दारों के छुक्क, पड़ोसियों के छुक्क वगैरा जो हें वोह आम बन्दों के छुक्क से ज़ियादा अहम्मियत रफते हें. येह सारे छुक्क ईस मुफ्तसर से बयान में नहीं सीधे जा सकते ईस के लिये मक्तबतुल मदीना के मत्बूआ ईन तीन रसाईल (1) वालिदैन, जौजैन और असातिजा के छुक्क (2) छुक्कुल ईबाह कैसे मुआफ़ हों और (3) औलाह के छुक्क का मुतालआ इरमाईये नीज मदनी काइलों में सुन्नतों बरा सफ़र करते रहिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى छुक्कुल ईबाह के बारे में मा'लूमात के साथ साथ अहत्तियात का जजबा ली पैदा होगी और जब अहत्तियात करेंगे तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى जन्नत का रास्ता आसान हो जायेगा.

आलिम के मुफ्तलिफ़ अन्दाज की निशान देडी

मुसल्मानों को सताने वालों, लोगों के दिल दुभाने वालों, लोगों के बुरे नाम रखने वालों, लोगों पर इब्तियां कसने वालों, लोगों की नकलें उतारने वालों, और लोगों का मजाक उडाने वालों के लिये लम्हअे फ़िक्रिया है, सुनो ! सुनो ! रब्बे काअेनात عَزَّوَجَلَّ पारह 26 सूरतुल छुजुरात आयत नम्बर 11 में ईशाह इरमाता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا
 مِنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّنْ نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِنْهُنَّ وَلَا تَلْمِزُوا
 أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَرُوا بِالْأَلْقَابِ ۚ بِئْسَ الْإِسْمُ الْفُسُوقِ بَعْدَ
 الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक दिन में 50 बार दुरुदे पाक पढे क्रियामत के दिन में उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाओ) गा. (ابن بشكوال)

मेरे आका आ'ला उजरत, एमामे अडले सुन्नत, वलिये ने'मत, अजीमुल भरकत, अजीमुल मर्तबत, परवानअे शम्भे रिसालत, एमामे एशको मडब्बत, मुजदददे दीनो मिल्लत, डामिये सुन्नत, माडिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीकत, आइताबे विलायत, बाएसे भैरो भरकत, उजरते अद्लामा मौलाना अलडाज अल डाफ़िज अल कारी शाह एमाम अडमद रज़ा भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने शोहरअे आइक तरजमअे कुरआन, कन्जुल एमान में एस का तरजमा यूं करते हैं : अै एमान वालो ! न मर्द मर्दों से हंसें अजब नहीं के वोड एन हंसी हंसने वालों से बेहतर हों और न औरतें औरतों से, दूर नहीं के वोड एन हंसने वालियों से बेहतर हों और आपस में ता'ना न करो और अक दूसरे के भुरे नाम न रभो. क्या ही भुरा नाम मुसल्मान हो कर फ़ासिक कडलाना और जो तौबा न करें वोही ज़ालिम हैं.

किसी की हंसी उडाना गुनाह है

मीठे मीठे एस्लामी भाएयो ! किसी की गुरबत या हसब नसब या जिस्मानी अैब पर हंसना गुनाह है एसी तरह किसी मुसल्मान को भुरे अडकाब से पुकारना भी गुनाह है, किसी को कुत्ता, गधा, सुवर वगैरा नहीं कड सकते, एसी तरह किसी में अैब मौजूद हो तब भी उसे उस अैब के साथ नहीं पुकार सकते मसलन अै अन्धे ! अबे काने ! ओ लम्बे ! अरे ठिगने ! वगैरा, हां उजरतन पडयान करवाने के लिये नाभीना वगैरा कड सकते हैं. लोगों पर हंसने, भुरे अडकाब से पुकारने

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : બરોડે કિયામત લોગોં મેં સે મેરે કરીબ તર વોહ હોગા જિસ ને દુન્યા મેં મુજ પર ઝિયાદા દુરુદે પાક પઢે હોંગે. (તરમ્દી)

और मजाक उडाने वालों को कुरआने पाक ने “झासिक” का इतवा ईशाद ईरमाया है और जो तौबा न करे उसे जालिम करार दिया है. लोगों का मजाक उडाने वालो ! कान ખોલ કર સુન લો !

મજાક ઉડાને કા અઝાબ

જબ કિસી મુસલ્માન કા મજાક ઉડાને કો જી યાહે તો ખુદારા ઇસ રિવાયત પર ગૌર ફરમા લિયા કીજિયે જિસ મેં સરકારે નામદાર, મદીને કે તાજદાર, રસૂલોં કે સાલાર, નબિયોં કે સરદાર, શહન્શાહે અબરાર, સરકારે વાલા તબાર, હમ ગરીબોં કે ગમ ગુસાર, હમ બે કસોં કે મદદગાર, સાહિબે પસીનએ ખુશબૂદાર, શફીએ રોઝે શુમાર, જનાબે અહમદે મુખ્તાર ﷺ કા ફરમાને ઇબ્રત નિશાન હૈ : કિયામત કે રોઝ લોગોં કા મજાક ઉડાને વાલે કે સામને જન્નત કા એક દરવાઝા ખોલા જાએગા ઓર કહા જાએગા કે આઓ ! આઓ ! તો વોહ બહોત હી બેચૈની ઓર ગમ મેં ડૂબા હુવા ઉસ દરવાઝે કે સામને આએગા મગર જૈસે હી દરવાઝે કે પાસ પહોંચેગા વોહ દરવાઝા બન્દ હો જાએગા. ફિર જન્નત કા એક દૂસરા દરવાઝા ખુલેગા ઓર ઉસ કો પુકારા જાએગા કે આઓ ! યુનાન્યે યેહ બેચૈની ઓર રન્જો ગમ મેં ડૂબા હુવા ઉસ દરવાઝે કે પાસ જાએગા તો વોહ દરવાઝા ભી બન્દ હો જાએગા. ઇસી તરહ ઉસ કે સાથ મુઆમલા હોતા રહેગા યહાં તક કે જબ દરવાઝા ખુલેગા ઓર પુકાર પડેગી તો વોહ નહીં જાએગા.

(کتابُ الصَّمْتِ معِ موسُوعَةِ امامِ ابنِ ابي الدُّنْيَا، ج ٤ ص ١٨٣ - ١٨٢، رقم ٢٨٤)

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَضْفًا﴾ : جس نے मुज पर ऐक मर्तबा दुव्द पढा अल्लाह उस पर दस रदमों लेजता और उस के नामअे आ'माल में दस नेकियां लिखता है. (ترمذی)

मुआझी मांग लीजिये

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! सब घबरा कर अल्लाह **كَلِّمُوا** की बारगाह में रुजूअ कर लीजिये, सख्खी तौबा कर लीजिये और ठहरिये ! बन्दों की हक तलफ़ी के मुआमले में बारगाहे ईलाही **كَلِّمُوا** में सिर्फ़ तौबा करना काफ़ी नहीं, बन्दों के जो जो हुकूम पामाल किये हों वोह भी अदा करने होंगे, मसलन मावी हक है तो उस का माल लौटाना होगा, दिल् दुषाया है तो मुआझ करवाना होगा. आज तक जिस जिस का मजाक उड़ाया, भुरे अल्काब से पुकारा, ता'ना जनी और तन्ज बाजी की, दिल् आजार नकलें उतारीं, दिल् दुषाने वाले अन्दाज में आंभें दिभाईं, घूरा, उराया, गावी दी, गीबत की और उस को पता चल गया. जाडा, मारा, जलील किया, अल गरज किसी तरह भी बे ईजाजते शर्ह ईजा का भाईस बने उन सब से इरदन इरदन मुआझ करवा लीजिये, अगर किसी इई के बारे में येह सोच कर बाज रह के मुआझी मांगने से उस के सामने मेरी “पोजीशन डउन” हो जायेगी तो भुदारा गौर इरमा लीजिये ! क्रियामत के रोज अगर येही इई आप की नेकियां हासिल कर के अपने गुनाह आप के सर डाल देगा उस वक्त क्या होगा ! भुदा की कसम ! सहीह मा'नों में आप की “पोजीशन” की धज्जियां तो उस वक्त उठेंगी और आह ! कोई दोस्त बिरादर या अजीज हमदर्दी करने वाला भी न मिलेगा. जल्दी कीजिये ! जल्दी कीजिये ! अपने वालिदैन के कदमों में गिर कर, अपने अजीजों के आगे हाथ जोड कर, अपने मा

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقْبَلًا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : शबे जुमुआ और रोजे जुमुआ मुज पर दुरुद की कसरत कर लिया करो जो असा करेगा कियामत के दिन मैं उस का शर्कीअ व गवाह बनूंगा. (شعب الإيمان)

तहत्तो के पाँउ पकड कर अपने ईस्लामी भाईयों और दोस्तों से गिडगिडा कर, उन के आगे झुट्ट को जलील कर के आज दुन्या में मुआझी मांग कर आभिरत की ईज्जत हासिल करने की सई इरमा लीजिये. **अद्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** इरमाते हैं : **يَا'نِي** जो **अद्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये आजिजी करता है **अद्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस को बुलन्दी अता इरमाता है. (شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٦ ص ٢٩٤ - حَدِيثُ ٨٢٢٩ دَارُ الْكُتُبِ الْعِلْمِيَةِ بَيْرُوتِ) सभ ओक दूसरे से **मुआझी** मांग लीजिये और सभ ओक दूसरे को **मुआझ** भी कर दीजिये.

मैं ने मुआझ किया

जिस के साथ लोग जियादा मुन्सलिक होते हैं उस से बन्दों की डक तलकियों के सुदूर का ईम्कान भी जियादा होता है. मुज सगे मदीना **بَنَدُ** से वाबस्तगान की ता'दाद भी बहोत जियादा है, आह ! न जाने कितनों का मुज से दिल् दृष ज़ता होगा ! ! मैं हाथ जोड कर अर्ज करता हूँ : मेरी ज़ात से किसी की जान, माल या आबज़ को **नुकसान** पड़ोया हो वोह याहे तो बदला ले ले या मुजे मुआझ कर दे, अगर किसी का मुज पर कर्ज आता हो तो बेशक वुसूल कर ले अगर लेना नहीं याहता तो मुआझी से नवाज दे. जो मेरा कर्जदार है मैं अपनी ज़ाती रकमें उस को **मुआझ** करता हूँ. **अै अद्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! मेरे सभब से किसी मुसल्मान को अज़ाब न करना. मैं ने हर मुसल्मान को अपने अगले पिछले **हुकूक** मुआझ किये याहे जिस ने मेरी दिल् आज़ारी की या आयन्दा करेगा, मुजे

करमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَيْنِيَدُ الْبِهِرَسَلْمُ : जब तुम रसूलों पर दुर्रद पढो तो मुज पर भी पढो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ. (جمع الجوامع)

रकमें लौटानी डोंगी

जिस पर किसी का कर्ज आता है वोह युका दे और अगर अदाअेगी में ताप्पीर की है तो मुआझी भी मांगे, जिस से रिशवत ली, जिस की जेब काटी, जिस के यहाँ थोरी की, जिस का माल लूटा इन सब को इन के अमवाल लौटाने जरूरी हैं, या उन से मोहलत ले या मुआझ करवा ले और जो तकलीफ़ पडोंथी इस की भी मुआझी मांगे. अगर वोह शप्स झौत हो गया है तो वारिसों को दे अगर कोई वारिस न हो तो उतनी रकम सदका करे. अगर लोगों का माल दबाया है मगर येह याद नहीं के किस किस का माले नाहक लिया है तब भी उतनी रकम सदका करे या'नी मसाकीन को दे दे. सदका कर देने के बा'द भी अगर अहले हक ने मुतालबा कर दिया तो उस को देना पडेगा.

जो याद नहीं उन से किस तरह मुआझ करवाअें ?

जो ईस्लामी भाई हुकूकुल ईबाद के मुआमले में पौईजदा हैं और अब सोय में पड गअे हैं के हम ने तो न जाने कितनों की हक तलफ़ियां की हैं और कितनों डी का हिल दुषाया है, अब हम किस किस को कहां कहां तलाश करें ! तो अैसों की भिदमतों में अर्ज है के जिन जिन की हिल आजारी वगैरा की है उन में से जितनों से राबिता मुम्किन है उन से मिल कर या झोन पर या तहरीरी तौर पर राबिता कर के मुआझी तलाझी की तरकीब बना लीजिये उन को राजी कर लीजिये और जो जो गाईब हैं या झौत हो चुके हैं, या जिन के बारे में याद ही नहीं के वोह

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोजे जुमुआ मुज पर कसरत से दुरुद पढो क्यूंके तुम्हारा दुरुद मुज पर पेश किया जाता है. (طبرانی)

नेकी बाकी नहीं. मजलूम (मुदध) अर्ज करेगा : “मेरे गुनाह इस के जिम्मे डाल दे.” ईतना ईशादि फरमा कर सरवरे काअेनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रो पडे, फरमाया : वोह दिन बहोत अजीम दिन डोगा क्यूंके उस वक्त (या’नी बरोजे क्रियामत) हर ओक इस बात का जरूरत मन्द् डोगा के उस का बोज ललका डो. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मजलूम (या’नी मुदध) से फरमाओगा : देख तेरे सामने क्या है ? वोह अर्ज करेगा : ओ परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपने सामने सोने के बडे शहर और बडे बडे महल्लात देख रहा हूं जो मोतियों से आरास्ता हैं येह शहर और उम्दा महल्लात किस पैगम्बर या सिद्दीक या शहीद के लिये हैं ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फरमाओगा : येह उस के लिये हैं जो ईन की कीमत अदा करे. बन्दा अर्ज करेगा : ईन की कीमत कौन अदा कर सकता है ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फरमाओगा : तू अदा कर सकता है. वोह अर्ज करेगा : किस तरह ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फरमाओगा : इस तरह के तू अपने भाई के लुकूक मुआइ कर दे. बन्दा अर्ज करेगा : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने सब लुकूक मुआइ किये. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फरमाओगा : अपने भाई का हाथ पकडो और दोनों ईकट्टे जन्नत में यले जाओ. फिर सरकारे नामदार, दो आलम के मालिको मुप्तार, शह-शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और मप्लूक में सुलह करवाओ क्यूंके अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी बरोजे क्रियामत मुसल्मानों में सुलह करवाओगा.

(الْمُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٥ ص ٤٩٥ حديث ٨٤٥٨ دارالمعرفة بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جِس نے موز پر اِک بار دُرُودے پاک پढا اِصلواہُ اِسن پر دس رُحمتے ٔے. (مسلم)

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! બયાન કો ઈખ્તિતામ કી તરફ લાતે હુએ સુન્નત કી ફઝીલત ઓર ચન્દ સુન્નતે ઓર આદાબ બયાન કરને કી સઆદત હાસિલ કરતા હું. તાજદારે રિસાલત, શહન્શાહે નુબુવ્વત, મુસ્તફા જાને રહમત, શમ્એ બઝમે હિદાયત, મહબૂબે રબ્બુલ ઈઝ્ઝત ﷺ કા ફરમાને જન્નત નિશાન હે : જિસ ને મેરી સુન્નત સે મહબ્બત કી ઉસ ને મુઝ સે મહબ્બત કી ઓર જિસ ને મુઝ સે મહબ્બત કી વોહ જન્નત મેં મેરે સાથ હોગા.

(مشكاة المصابيح، ج 1 ص 55، حديث 145، دارالكتب العلمية بيروت)

સુન્નતે આમ કરેં દીન કા હમ કામ કરેં

નેક હો જાઓ મુસલમાન મદીને વાલે

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**“એક યુપ દઝાર સુખ” કે બારહ હુરૂફ કી નિસ્બત સે
બાત ચીત કરને કે 12 મદની ફૂલ**

﴿1﴾ મુસ્કુરા કર ઓર ખન્દા પેશાની સે બાત ચીત કીજિયે ﴿2﴾

મુસલમાનોં કી દિલજૂઈ કી નિચ્ચત સે છોટોં કે સાથ મુશ્ફિકાના ઓર બડોં કે સાથ મુઅદબાના લહજા રખિયે ﷺ સવાબ કમાને કે સાથ સાથ દોનોં કે નઝદીક આપ મુઅઝ્ઝઝ રહેંગે ﴿3﴾ ચિલ્લા ચિલ્લા કર બાત કરના જૈસા કે આજકલ બે તકલ્લુફી મેં અકસર દોસ્ત આપસ મેં કરતે હેં સુન્નત નહીં ﴿4﴾ ચાહે એક દિન કા બચ્ચા હો અચ્છી અચ્છી નિચ્ચતોં કે સાથ ઉસ સે ભી આપ જનાબ સે ગુફત્ગૂ કી આદત બનાઈયે. આપ કે

﴿5﴾ **इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वो ह मुज पर दुइदे पाक न पड़े. (तर्मذ़ी)

अप्लाक भी **إِنْ كَانَتْ لَكَ نَجَسٌ** उम्दा होंगे और बख्या भी आदाब सीभेगा

﴿5﴾ बात थीत करते वक्त पर्दे की जगह हाथ लगाना, उंगलियों के जरीअे बदन का मैल छुडाना, दूसरों के सामने बार बार नाक को छूना या नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अस्थी बात नहीँ, ँस से दूसरों को घिन आती है

﴿6﴾ जब तक दूसरा बात कर रहा हो, ँत्मीनान से सुनिये. उस की बात काट कर अपनी बात शुरुअ कर देना सुन्नत नहीँ

﴿7﴾ बात थीत करते हुअे बढके किसी भी हावत में कडूकहा न लगाईये सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कभी कडूकहा नहीँ लगाया

﴿8﴾ जियादा बातें करने और बार बार कडूकहा लगाने से हैअत जाती रहती है.

﴿9﴾ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : “जब तुम किसी अन्दे को देओ के उसे दुन्या से बे रगअती और कम बोलने की ने'मत अता की गई है तो उस की कुरअत व सोअअत ँप्तियार करो क्युंके उसे अिकमत दी जाती है.” (سُنَنُ ابْنِ مَاجَه، ج ۴، ص ۴۲۲ حدیث ۴۱۰۱)

﴿10﴾ इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “जो युप रहा ँस ने नजात पाई.” (سُنَنُ التِّرْمِذِي ج ۴ ص ۲۲۵ حدیث ۲۵۰۹)

मिरआतुल मनाज्जल में है : हुज्जतुल ँस्लाम अजरते सय्यिदुना ँमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गजाली इरमाते हें के : गुफ्तूगू की यार किरमें हें : (1) आलिस मुजिर (या'नी मुकम्मल तौर पर नुकसान देह) (2) आलिस मुईद (3) मुजिर (या'नी नुकसान देह) भी मुईद भी (4) न मुजिर न मुईद. आलिस मुजिर (या'नी मुकम्मल नुकसान देह) से अमेशा परहेज अइरी है, आलिस मुईद कलाम (बात) अइर कीजिये, जो कलाम मुजिर भी हो

फ़रमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर दस भरतभा दुर्रदे पाक पढे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रउमतें नाज़िल फ़रमाता है. (طبرانی)

मुफ़ीद भी उस के बोलने में अेडतियात करे बेडतर है के न बोले और यौथी किस्म के कलाम में वक्त जाअेअ करना है. एन कलामों में एम्तियाज करना मुश्किल है लिहाजा आभोशी बेडतर है. (मिरआतुल मनाज्जिद, जि. 6, स. 464) ﴿11﴾ किसी से जब बात थीत की जाअे तो उस का कोए सडीड मकसद भी होना याडिये और हमेशा मुभातब के जई और उस की नईसियात के मुताबिक बात की जाअे ﴿12﴾ बढ जभानी और बे डयाई की बातों से डर वक्त परडेज कीजिये, गाली गलोय से एजतिनाब करते रडिये और याड रभिये के किसी मुसल्मान को बिला एजजते शरूँ गाली देना डरामे कर्ँ है. (इतावा रजबिया, जि. 21, स. 127) और बे डयाई की बात करने वाले पर जन्नत डराम है. डुजूर ताजडारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने डरमाया : “उस शप्स पर जन्नत डराम है जो डोडूश गोई (बे डयाई की बात) से काम लेता है.”

(كتاب الصّمت مع موسوعة الامام ابن ابي الدنيا، ج ٤ ص ٢٠٢ رقم ٣٢٥ المكتبة العصرية بيروت)

भाती थीत करने की तईसीली मा'लूमात डसिल करने और दीगर सेंकडों सुन्नतें सीअने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 120 सईडत की डिताब “सुन्नतें और आदाब” डदिय्यतन डसिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की तरबियत का अेक बेडतरीन जरीआ दा'वते ईस्लामी के मदनी काइलों में आशिकाने रसूल के साथ सुन्नतों त्भरा सडर भी है.

सीअने सुन्नतें काइले में यलो लूटने रउमतें काइले में यलो

डोंगी डल मुश्किलें काइले में यलो पाओगे डरकतें काइले में यलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿786﴾ फ़ेहरिस ﴿92﴾

उन्वान	सङ्ख्या	उन्वान	सङ्ख्या
मोतियों वाला ताज	1	में ने तेरा कान मरोडा था	16
भौंङनाक डकू	1	मुसल्मान की ता'रीफ़	16
अलिम को मोडलत मिलती है	2	मुसल्मान को धूरना, उराना	17
औंधे मुंड जल्नम में	4	हम शरीफ़ डे	
आग की बेडियां	4	साथ शरीफ़ और.....	18
मुफ़लिस कौन	5	जो बुराई करे उस पर ली	
लरज उठो !	6	जुल्म न करो	19
आधा सेब	7	पराई कलम लौटाने डे लिये सङ्कर	20
खिलाल का वबाल	8	बिगैर ईजाजत किसी की यप्पल	
गेहूँ का दाना तोडने का		पहनना कैसा ?	20
उपरवी नुकसान	9	पुशबू सूँघने में अेडतियात	22
सात सो भा जमाअत नमाजें	9	यराग बुजा दिया !	22
अदाअे कर्ज में बिला वजह ताप्पिर गुनाह है	11	भाग या जल्नम का गढा	23
गैरत मन्दी का तकाजा	12	आधी भजूर	23
नेकियों डे जरीअे मालदार	12	शाही थप्पड का अन्जाम	24
अद्लाह व रसूल को ईजा देने वाला	13	झाड़के आ'जम की सादगी	25
दिल छिला देने वाली पारिश	14	बुरे प्जातिमे डे अस्बाब	26
जन्नत में धूमने वाला	15	पुद्द को किसी का "गुलाम"	
आका عَلَى اللّٰهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की		कहना कैसा ?	26
बे ईन्तिला आजिजी	15	क्या डाल है ?	27

﴿786﴾ फ़ेहरिस ﴿92﴾

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
मुनाफ़िक ठहड़ंगा की वजाहत	28	क्रिसी की हंसी उडाना गुनाह है	34
मजलूम की धमदाह करना ज़रूरी है	29	मजाक उडाने का अजाब	35
कब्र से शो'ले उठ रहे थे !	30	मुआफ़ी मांग लीजिये	36
मुसल्मानों का गम	30	मैं ने मुआफ़ किया	37
योर का गम	31	रकमें लौटानी होंगी	39
योरी का अजाब	31	जो याद नहीं उन से किस तरह	
मुफ़्तलिफ़ लुडूक सीपने का तरीका	32	मुआफ़ करवाओं ?	39
जालिम के मुफ़्तलिफ़ अन्दाज की		अदलाह <small>الْأَدْلَاءُ</small> सुलह करवायेगा	40
निशान देही	33	भात चीत करने के 12 मदनी झूल	42

येह रिसाला पढ कर दूसरे को दे दीजिये

शाही गमी की तकरीबात, धजतिमाआत, आ'रास और जुलूसे भीलाह वगैरा में मक्तबतुल मदीना के शाअेअ कर्दा रसाथल और मदनी झूलों पर मुशतमिल पेम्फ़लेट तकसीम कर के सवाब कमाईये, गाहकों को ब निख्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाथल रपने का मा'भूल बनाईये, अफ़बार इरोशों या बरय्यों के जरीअे अपने महल्ले के घरों में हरेभे तौफ़ीक रिसाले या मदनी झूलों के पेम्फ़लेट हर माह पढोया कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाईये और ખૂબ सवाब कमाईये.

नेक नमाजी'अलने'के'लिये

हर जुमे'रत मा'द नमाजे ईसा आप के फलां लीने वाली हा'बले ईस्लामी के बरकतवार सुन्नतों अरे ईजतिमान में रिजामे ईलाही के लिये अचड़ी अचड़ी नियतों के साथ सारी रत शिर्क करमाईये ☹ सुन्नतों की तरफियत के लिये भदनी काफिले में आधिकाने रसूल के साथ हर मास तीन दिन सकर और ☹ रोजाना जम्मेरा लेते हुये नेक आ'माज हा रिखावा पुर कर के हर महीने की फतली तारीख ले अपने फलां के जिम्मेदार की जम्ब करवाने हा मा'भूख बना लीजिये.

मैदा भदनी मठसाह : "मुजे अपनी और सारी दुन्या के खोनों की ईरवाह की कोशिस करनी है. 🙏" अपनी ईरवाह के लिये "नेक आ'माज" पर अमज और सारी दुन्या के खोनों की ईरवाह की कोशिस के लिये "भदनी काफिले" में सकर करना है. 🙏

